Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

राजस्थान विधानसभा चुनावों में मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन: विधानसभा क्षेत्र डीडवाना के विशेष संदर्भ में (चुनाव 2013 और 2018)

घनश्याम

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * घनश्याम

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20095330

सारांश

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, जहाँ शासन व्यवस्था की आधारशिला जनता की सहभागिता पर आधारित है। लोकतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि नागरिक किस प्रकार चुनावी प्रक्रिया में भाग लेते हुए अपने मताधिकार का उपयोग करते हैं। चुनाव केवल प्रतिनिधियों के चयन का माध्यम ही नहीं होते हैं, बल्कि यह राजनीतिक चेतना, जनमत और सामाजिक संरचना का भी दर्पण होते हैं इसलिए किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदाताओं के मतदान व्यवहार का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत में मतदान व्यवहार अनेक कारकों से प्रभावित होता है, जिनमें सामाजिक संरचना, जाति, धर्म, आर्थिक स्थिति, शिक्षा स्तर, राजनीतिक दलों की नीतियाँ, उम्मीदवार की व्यक्तिगत छवि, चुनावी घोषणाएँ और वादे तथा क्षेत्रीय विकास जैसे प्रमुख तत्व शामिल हैं। विशेष रूप से राजस्थान जैसे राज्य में जहाँ सामाजिक संरचना और जातीय समूहों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है, वहाँ मतदान व्यवहार का अध्ययन राजनीतिक प्रक्रियाओं को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। प्रस्तुत शोध इन्हीं बातों को रेखांकित करते हुए राजस्थान के विधानसभा चुनावों में मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में (चुनाव 2013 और 2018) करने का प्रयास करता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के मतदाताओं के मतदान व्यवहार का गहन विश्लेषण करना है तथा यह समझना है कि वर्ष 2013 और 2018 के विधानसभा चुनावों में मतदाताओं के निर्णय को किन-किन कारकों ने प्रभावित किया है। इसके साथ ही, यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि इन दोनों चुनावों के बीच मतदाताओं की प्राथमिकताओं और राजनीतिक सोच में किस प्रकार का परिवर्तन हुआ है। यह शोध-पत्र प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 04-04-2026
- **Accepted:** 27-04-2026
- **Published:** 09-05-2026
- **MRR:**4(5); 2026: 20-28
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

घनश्याम. राजस्थान विधानसभा चुनावों में मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन: विधानसभा क्षेत्र डीडवाना के विशेष संदर्भ में (चुनाव 2013 और 2018). Indian J Mod Res Rev. 2026;4(5):20-28.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: विधानसभा चुनाव, राजस्थान, मतदान व्यवहार, डीडवाना, आनुभविक अध्ययन ।

© 2026 घनश्याम. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

वर्तमान का युग लोकतंत्र का युग है, जिसे विश्व के अधिकांश विकसित और प्रगतिशील देशों ने एक आदर्श शासन प्रणाली का एक रूप माना है। अन्य प्रणालियों की तुलना में प्रजातंत्र को इसकी सर्व-समावेशी और जन-कल्याणकारी प्रकृति के कारण सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। लोकतंत्र केवल राजनीति या सत्ता संचालन का एक ढांचा मात्र नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक गतिशील पद्धति भी है। प्रजातंत्र स्वतंत्रता, समानता और विश्व भातृत्व के आदर्शों पर टिका हुआ है, जो एक अनुशासित और न्यायपूर्ण समाज की नींव रखते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य समाज का सर्वांगीण विकास और प्रत्येक व्यक्ति के हितों की रक्षा करना है। इसमें जाति, धर्म या वर्ग के भेदभाव के बिना सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त होते हैं और सत्ता का परिवर्तन हिंसा से नहीं, बल्कि जनता के मत के माध्यम से होता है। इस प्रकार प्रजातंत्र शासन और नागरिक के बीच एक अटूट संबंध स्थापित करता है, जहाँ शक्ति का वास्तविक स्रोत स्वयं जनता होती है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जो समाज में शांतिपूर्ण और प्रगतिशील बदलाव सुनिश्चित करती है।

नियमित एवं निष्पक्ष चुनाव व्यवस्था किसी भी लोकतान्त्रिक व्यवस्था की प्राण होती है। प्रत्येक शासन व्यवस्था में चुनाव प्रक्रिया के महत्त्व को स्वीकार किया जाता है किंतु निर्वाचन प्रक्रिया तथा उस प्रक्रिया को संचालित करने वाली व्यवस्था इसका बुनियादी आधार होती है। लोकतंत्र में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि चुनाव होते हैं, अपितु उससे भी ज्यादा यह महत्वपूर्ण है कि चुनाव किस भांति होते हैं, कितने निष्पक्ष होते हैं और आम मतदाता का निर्वाचन व्यवस्था को संचालित करने वाली व्यवस्था पर कितना विश्वास होता है तथा आम मतदाता का स्वयं निर्वाचन व्यवस्था में कितनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाता है। उपरोक्त बातें स्वतंत्र और स्वच्छ लोकतंत्र के निर्माण के लिए आवश्यक हैं।

प्रत्येक लोकतांत्रिक ढांचे में नागरिकों के राजनीतिक आचरण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू उनका मतदान व्यवहार है। चुनावी प्रक्रिया के दौरान मतदाताओं द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका और उनके निर्णयों को ही 'मतदान व्यवहार' के रूप में जाना जाता है। मतदान व्यवहार का तात्पर्य उस निश्चित प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से एक मतदाता चुनाव के समय अपने मताधिकार का प्रयोग करता है। यह केवल एक वोट डालने की क्रिया नहीं है, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें यह मतदाता के आंतरिक विचारों, विश्वासों और धारणाओं से प्रेरित होती है। मतदान का निर्णय कई आंतरिक (निजी सोच) और बाहरी (सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक) तत्वों से प्रभावित होता है। यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो सीधे तौर पर समाज की राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों से गहरे रूप में जुड़ी होती है।

राजस्थान में लोकतंत्र की जड़ें स्वतंत्रता के पश्चात बहुत गहराई से जमी हैं। राज्य में 1952 से अब तक हुए सभी आम चुनावों में मतदाता सक्रिय रूप से भाग लेते आए हैं। यहाँ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी दो प्रमुख राजनीतिक दल हैं, जबकि बसपा, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी तथा निर्दलीय प्रत्याशी भी स्थानीय प्रभाव बनाए रखते हैं। राजस्थान में कुल 200 विधानसभा क्षेत्र हैं, जिनमें से कई क्षेत्र ग्रामीण-आधारित हैं और सामाजिक संबंधों तथा जातीय समीकरणों पर मतदान आधारित होता है। शहरी क्षेत्रों में मतदान व्यवहार अपेक्षाकृत अधिक मुद्दा-केन्द्रित तथा उम्मीदवार की छवि पर आधारित होता है।

2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के मतदाताओं के मतदान व्यवहार का गहन विश्लेषण करना है तथा यह समझना है कि वर्ष 2013 और 2018 के विधानसभा चुनावों में मतदाताओं के निर्णय को किन-किन कारकों ने प्रभावित किया है। इसके साथ ही, यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि इन दोनों चुनावों के बीच मतदाताओं की प्राथमिकताओं और राजनीतिक सोच में किस प्रकार का परिवर्तन हुआ है। डीडवाना विधानसभा क्षेत्र डीडवाना-कुचामन जिले का एक महत्वपूर्ण राजनीतिक क्षेत्र है, जहाँ सामाजिक, आर्थिक और जातीय विविधता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। इस क्षेत्र में विभिन्न जातीय समूहों, ग्रामीण-शहरी मतदाताओं तथा अलग-अलग आर्थिक वर्गों के लोग निवास करते हैं, जो चुनावी राजनीति को प्रभावित करते हैं। इसलिए इस क्षेत्र का अध्ययन राजस्थान की व्यापक चुनावी राजनीति को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

3. शोध प्रविधि

इस शोध में डीडवाना विधानसभा के मतदाताओं के मतदान व्यवहार का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के दो चुनावों (चुनाव 2013 और 2018) का आनुभविक अध्ययन करने के लिए डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के 10 मतदान केंद्रों का चयन रैंडमली किया गया है और प्रत्येक मतदान केन्द्र से 20 मतदाताओं को रैंडमली चयनित करके कुल 200 मतदाताओं से साक्षात्कार किया गया है।

इसके अतिरिक्त, द्वितीयक स्रोतों में निर्वाचन आयोग के आँकड़े, सरकारी प्रकाशन, पुस्तकें, शोध-पत्र, समाचार पत्र तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों से प्राप्त सामग्री का भी उपयोग किया गया है। इन एकत्रित आँकड़ों को विभिन्न तालिकाओं और प्रतिशत के माध्यम से प्रस्तुत कर उनका गहन विश्लेषण किया गया है, जिससे मतदान व्यवहार के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

डीडवाना विधानसभा क्षेत्र

डीडवाना विधानसभा क्षेत्र नागौर संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत आता है जो मारवाड़ इलाके में पड़ता है। नागौर जिला जाट राजनीति का केंद्र माना जाता है क्योंकि यहाँ पर इस समुदाय की बहुसंख्यक जनसंख्या निवास करती है। बलदेव राम मिर्धा परिवार के समय राज्य में जाट राजनीति शिखर पर पहुंची थी और नागौर जिला जाट राजनीति का सियासी केंद्र बना।

वर्तमान में जिले में कुल 10 विधानसभा सीट है जिनमें से 8 सामान्य वर्ग के लिए है और दो अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है। डीडवाना विधानसभा सीट सामान्य वर्ग से संबंधित है। डीडवाना नगर का पुराना नाम आभानगरी था। बाद में इसे आभानगरी से बदलकर दीन दीदवाना कर दिया गया। कुछ वर्षों बाद, इसी क्षेत्र के डीडू शाह नामक राजा ने इसका नाम बदलकर दीदवाना से डीडवाना कर दिया; तब से यही नाम प्रचलित है।

© 2026 घनश्याम. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

डीडवाना विधानसभा क्षेत्र: 2013 और 2018 के चुनाव

डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के 2013 और 2018 के चुनाव राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, मतदाता व्यवहार और सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखते हैं। वर्ष 2013 में डीडवाना में त्रिकोणीय मुकाबले का प्रभाव देखा गया, परन्तु मुख्य प्रतिस्पर्धा कांग्रेस और भाजपा के बीच रही। इस चुनाव में उच्च मतदान प्रतिशत दर्ज हुआ, विशेषकर महिलाओं की भागीदारी उल्लेखनीय रही। इसके परिणामस्वरूप भाजपा के यूनुस खान को विजय मिली। इस चुनाव के प्रमुख मुद्दों में स्थानीय मुद्दें, कृषि संकट और क्षेत्रीय नेतृत्व आदि शामिल थे।

वहीं, 2018 के विधानसभा चुनाव में डीडवाना में राजनीतिक माहौल और भी अधिक सक्रिय रहा। इस बार कांग्रेस उम्मीदवार चेतन डूडी ने भारी अंतर से जीत दर्ज की, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि मतदाताओं ने स्थानीय विकास, सामाजिक संतुलन और प्रदेश में उभरते राजनीतिक परिवर्तनों को प्राथमिकता दी। 2018 में भी महिलाओं का मतदान पुरुषों से अधिक रहा, जो क्षेत्र में सामाजिक–राजनीतिक जागरूकता के बढ़ते स्तर को दर्शाता है। दोनों चुनाव मिलकर डीडवाना क्षेत्र में मतदाता सक्रियता और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा की निरंतरता को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं।

डीडवाना विधानसभा चुनाव 2013 और 2018: मतदाता संरचना

डीडवाना विधानसभा क्षेत्र की 2013 और 2018 की मतदाता संरचनाओं की तुलना करने पर इस क्षेत्र में जनसांख्यिकीय विस्तार, लैंगिक भागीदारी और निर्वाचन प्रक्रिया में समावेश की दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। दोनों चुनावों के आंकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन न केवल मतदाता संख्या में हुए परिवर्तनों को दर्शाता है, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता के बढ़ते स्तर को भी रेखांकित करता है।

तालिका 1: डीडवाना विधानसभा चुनाव 2013 और 2018: मतदाता संरचना

क्र. सं.	श्रेणी	वर्ष	पुरुष	महिला	थर्ड जेंडर	कुल मतदाता	प्रतिशत (%)
1.	सामान्य मतदाता	2013	104641	96803	0	230625	पुरुष 52.08, महिला 47.92
		2018	119696	110928	1	230625	पुरुष 51.92, महिला 48.7
2.	प्रवासी मतदाता	2013	0	0	0	0	-
		2018	0	0	0	0	-
3.	सर्विस वोटर	2013	1206	663	0	1869	कुल 0.92
		2018	1413	21	0	1434	कुल 0.62
4.	कुल मतदाता	2013	105847	97466	0	203313	-
		2018	121109	110949	1	232059	-

स्रोत: चुनाव आयोग, भारत सरकार

इस विधानसभा क्षेत्र में वर्ष 2013 में कुल मतदाताओं की संख्या 2,03,313 थी, जो 2018 के चुनाव के समय यह बढ़कर 2,32,059 हो गई, जो लगभग 14.14% की वृद्धि दर्शाती है। 2013 में पुरुष मतदाता 1,05,847 (52.08%) और महिला मतदाता 97,466 (47.92%) थे। 2018 में पुरुष मतदाता बढ़कर 1,21,109 (52.18%) तथा महिला मतदाता 1,10,949 (47.80%) हो गए। इस अवधि के दौरान महिलाओं की संख्या में 13,483 की वृद्धि हुई, जबकि पुरुषों में 15,262 की बढ़ोतरी दर्ज की गई। 2013 में थर्ड जेंडर श्रेणी में कोई मतदाता दर्ज नहीं था। 2018 में 1 मतदाता का पंजीकरण हुआ। इसी प्रकार, 2013 में सर्विस वोटरों की संख्या 1,869 (कुल मतदाताओं का 0.92%) थी। 2018 में यह घटकर 1,434 (0.62%) रह गई। दोनों विधानसभा चुनावों की तुलना की जाए तो डीडवाना विधानसभा क्षेत्र में मतदाता संख्या और उनकी भागीदारी निरंतर बढ़ी है। कुल मिलाकर, डीडवाना की मतदाता संरचना 2013 से 2018 के बीच अधिक व्यापक, संतुलित और समावेशी हुई है।

डीडवाना विधानसभा चुनाव 2013 और 2018: मतदान

तालिका 2: डीडवाना विधानसभा चुनाव 2013 और 2018: मतदान

क्र. सं.	श्रेणी	वर्ष	पुरुष	महिला	थर्ड जेंडर	पोस्टल वोट	कुल मतदाता/ कुल वोट
1.	कुल वोट	2013	105847	97466	0	-	203313
		2018	121109	110949	1	-	232059
2.	वोट डाले गए	2013	73218	78224	0	1168	152610
		2018	80525	84230	0	1544	166299
3.	मतदान प्रतिशत	2013	69.17	80.25	-	-	75.06%
		2018	66.48	75.91	-	-	71.66%

स्रोत: चुनाव आयोग, भारत सरकार

डीडवाना विधानसभा क्षेत्र में पुरुष मतदाताओं की संख्या 2013 के 1,05,847 से बढ़कर 2018 में 1,21,109 हो गई। जबकि महिला मतदाताओं की संख्या 97,466 से बढ़कर 1,10,949 हो गई। हालांकि, मतदान प्रतिशत की दृष्टि से 2013 में महिला मतदान (80.25%) पुरुषों (69.17%) से 11% अधिक था, और यही प्रवृत्ति 2018 में भी दिखाई देती है, जहाँ महिला मतदान प्रतिशत 75.91% तथा पुरुष मतदान

© 2026 घनश्याम. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रतिशत 66.48% रहा। अर्थात महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरुषों से लगभग 9% अधिक रहा जो उनकी मतदान के प्रति जागरूकता को दर्शाता है। हालांकि, 2013 के विधानसभा चुनाव की अपेक्षा 2018 में महिलाओं के कुल मतदान में 2% की गिरावट दर्ज की गई। 2013 में कुल मतदान प्रतिशत 75.06% था, जबकि 2018 में यह घटकर 71.66% रह गया। यह लगभग 3.4% की कमी को दर्शाता है। कुल मिलाकर, 2018 में मतदाता संख्या बढ़ने के बावजूद मतदान प्रतिशत में गिरावट यह दर्शाती है कि निर्वाचन प्रक्रिया तक पहुंच बढ़ने के बावजूद मतदान के प्रति मतदाताओं के रूझान में कुछ कमी आई है। इसके विपरीत, महिला मतदाताओं की सक्रियता डीडवाना विधानसभा क्षेत्र में लगातार अधिक बनी रही है।

डीडवाना विधानसभा के 2013 और 2018 के चुनाव: तुलनात्मक विश्लेषण

1. क्या 2013–2018 के बीच डीडवाना विधानसभा क्षेत्र का राजनीतिक परिदृश्य बदला है?

तालिका 3: 2013–2018 के बीच डीडवाना क्षेत्र का राजनीतिक परिदृश्य

उत्तरदाताओं की कुल संख्या (मतदान केंद्र)	2013–2018 के बीच डीडवाना का राजनीतिक परिदृश्य		
	हाँ	नहीं	कहना कठिन है
खुनखुना (40)	30	6	4
खाटूखुर्द (40)	27	8	5
लोरोली खुर्द 40)	29	4	7
बालिया (40)	32	5	3
डीडवाना (40)	36	2	2
निम्बी कलां 40)	31	6	3
दौलतपुरा (40)	33	4	3
बेरीखुर्द (40)	28	7	5
डाबड़ा (40)	30	5	5
नोसर (40)	32	4	4
कुल उत्तरदाता (400)	308	51	41
प्रतिशत	77.0	12.75	10.25

प्रस्तुत तालिका-3 में डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के चयनित 10 मतदान केंद्रों के कुल 400 उत्तरदाताओं के आधार पर वर्ष 2013 से 2018 के बीच क्षेत्र के राजनीतिक परिदृश्य में आए परिवर्तनों के प्रति मतदाताओं की धारणा का विश्लेषण किया गया है।

इस तालिका के आंकड़ों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव को स्वीकार किया है। कुल 400 उत्तरदाताओं में से 308 उत्तरदाता (77 प्रतिशत) ने माना है कि वर्ष 2013 से 2018 के बीच डीडवाना क्षेत्र के राजनीतिक परिदृश्य में परिवर्तन हुआ है। इसके विपरीत, 51 उत्तरदाता (12.75 प्रतिशत) ने माना है कि इस अवधि में कोई विशेष बदलाव नहीं हुआ है। वहीं, 41 उत्तरदाता (10.25 प्रतिशत) ऐसे हैं जिन्होंने स्पष्ट राय व्यक्त नहीं की और "कहना कठिन है" विकल्प को चुना है।

2. किस चुनाव में आपको विकास/स्थानीय मुद्दे अधिक प्रभावी लगे?

तालिका 4: मतदाताओं पर विकास/स्थानीय मुद्दों का प्रभाव

उत्तरदाताओं की कुल संख्या (मतदान केंद्र)	मतदाताओं पर विकास/स्थानीय मुद्दों का प्रभाव				
	2013	2018	दोनों चुनाव में	इनमें से किसी में नहीं	कुल प्रतिशत
खुनखुना (40)	6	4	26	4	(100)
खाटूखुर्द (40)	8	7	22	3	(100)
लोरोली खुर्द (40)	10	6	20	4	(100)
बालिया (40)	9	8	18	5	(100)
डीडवाना (40)	6	5	26	3	(100)
निम्बी कलां (40)	8	7	20	5	(100)
दौलतपुरा (40)	7	8	22	3	(100)
बेरीखुर्द (40)	6	6	24	4	(100)
डाबड़ा (40)	5	7	25	3	(100)
नोसर (40)	6	6	24	4	(100)
कुल उत्तरदाता (400)	71	64	227	38	200
प्रतिशत	17.75	16.0	56.75	9.5	(100)

प्रस्तुत तालिका-5.3 में डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के चयनित 10 मतदान केंद्रों के कुल 400 उत्तरदाताओं के आधार पर वर्ष 2013 और 2018 के विधानसभा चुनावों में विकास कार्यों तथा स्थानीय मुद्दों के मतदाताओं के मतदान व्यवहार पर प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत किया

© 2026 घनश्याम. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

गया है। कुल 400 उत्तरदाताओं में से 227 उत्तरदाता (56.75 प्रतिशत) ने बताया है कि वर्ष 2013 और 2018 दोनों चुनावों में विकास कार्यों और स्थानीय समस्याओं ने उनके मतदान निर्णय को प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त, 71 उत्तरदाता (17.75 प्रतिशत) ने केवल वर्ष 2013 के चुनाव में विकास एवं स्थानीय मुद्दों का प्रभाव स्वीकार किया है, जबकि 64 उत्तरदाता (16 प्रतिशत) ने केवल वर्ष 2018 के चुनाव में इसका प्रभाव माना है। वहीं, 38 उत्तरदाता (9.5 प्रतिशत) ऐसे हैं जिन्होंने बताया है कि विकास या स्थानीय मुद्दों का उनके मतदान निर्णय पर किसी भी चुनाव में विशेष प्रभाव नहीं पड़ा है।

3. इन चुनावों (2013/18) में आपको कौनसे प्रचार का तरीका अधिक प्रभावी लगा?

तालिका 5: चुनावों में प्रचार के तरीके

उत्तरदाताओं की कुल संख्या (मतदान केंद्र)	2013/18 के चुनावों में प्रचार के तरीके				
	पारंपरिक प्रचार (सभाएँ, रैली)	घर–घर संपर्क	सोशल मीडिया	अन्य तरीके	कुल प्रतिशत
खुनखुना (40)	18	14	6	2	(100)
खाटूखुर्द (40)	15	17	5	3	(100)
लोरोली खुर्द (40)	21	13	4	2	(100)
बालिया (40)	23	15	2	0	(100)
डीडवाना (40)	16	12	8	4	(100)
निम्बी कलां (40)	18	10	9	3	(100)
दौलतपुरा (40)	20	12	6	2	(100)
बेरीखुर्द (40)	22	14	3	1	(100)
डाबड़ा (40)	24	10	4	2	(100)
नोसर (40)	21	13	4	2	(100)
कुल उत्तरदाता (400)	198	130	51	21	200
प्रतिशत	49.5	32.5	12.75	5.25	(100)

प्रस्तुत तालिका-5 में डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के चयनित 10 मतदान केंद्रों के कुल 400 उत्तरदाताओं के आधार पर वर्ष 2013 एवं 2018 के विधानसभा चुनावों में अपनाए गए प्रमुख प्रचार तरीकों का विश्लेषण किया गया है। उपरोक्त आंकड़ों का विश्लेषण करने पर कुल 400 उत्तरदाताओं में से 198 उत्तरदाता (49.5 प्रतिशत) ने पारंपरिक प्रचार माध्यमों (जनसभाएँ, रैलियाँ और प्रत्यक्ष संपर्क आधारित कार्यक्रम) को प्रमुख बताया है। दूसरे स्थान पर घर–घर संपर्क अभियान रहा है, जिसे 130 उत्तरदाताओं (32.5 प्रतिशत) ने महत्वपूर्ण प्रचार माध्यम के रूप में स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त, 51 उत्तरदाताओं (12.75 प्रतिशत) ने सोशल मीडिया को प्रचार का प्रमुख माध्यम माना है। वहीं, 21 उत्तरदाता (5.25 प्रतिशत) ने अन्य प्रचार तरीकों को महत्वपूर्ण बताया है, जिसमें पोस्टर, बैनर या स्थानीय नेटवर्किंग जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।

4. 2013–2018 के बीच स्थानीय नेतृत्व का प्रदर्शन कैसा लगा?

तालिका 6: 2013–2018 के बीच स्थानीय नेतृत्व का प्रदर्शन

उत्तरदाताओं की कुल संख्या (मतदान केंद्र)		2013–2018 के बीच स्थानीय नेतृत्व का प्रदर्शन		
		संतोषजनक	असंतोषजनक	कुछ हद तक
खुनखुना (40)		22	14	04
खाटूखुर्द (40)		20	14	06
लोरोली खुर्द (40)		18	18	04
बालिया (40)		21	13	06
डीडवाना (40)		26	11	03
निम्बी कलां (40)		23	12	05
दौलतपुरा (40)		20	14	06
बेरीखुर्द (40)		18	12	10
डाबड़ा (40)		22	15	03
नोसर (40)		19	17	04
कुल उत्तरदाता (400)		209	140	51
प्रतिशत		52.25	35.0	12.75

प्रस्तुत तालिका-6 में डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के चयनित 10 मतदान केंद्रों के कुल 400 उत्तरदाताओं के आधार पर वर्ष 2013 से 2018 के बीच स्थानीय नेतृत्व के प्रदर्शन के प्रति मतदाताओं की धारणा का विश्लेषण किया गया है। शोध सर्वे से प्राप्त कुल आंकड़ों के अनुसार,

© 2026 घनश्याम. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

209 उत्तरदाता (52.25 प्रतिशत) ने स्थानीय नेतृत्व के प्रदर्शन को संतोषजनक बताया है। इसके विपरीत, 140 उत्तरदाता (35 प्रतिशत) ने स्थानीय नेतृत्व के प्रदर्शन को असंतोषजनक माना है। इसके अलावा, 51 उत्तरदाता (12.75 प्रतिशत) ने स्थानीय नेतृत्व के प्रदर्शन को "कुछ हद तक संतोषजनक" माना है।

5. डीडवाना क्षेत्र के प्रमुख चुनावी मुद्दे-2013/2018 आपके अनुसार क्या थे?

तालिका 7: डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के प्रमुख चुनावी मुद्दे

उत्तरदाताओं की कुल संख्या (मतदान केंद्र)	डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के प्रमुख चुनावी मुद्दे					
	पानी	सड़क/बिजली	कृषि/किसान समस्या	बेरोजगारी	स्वास्थ्य/शिक्षा	अन्य मुद्दे
खुनखुना (40)	06	8	12	8	06	0
खाटूखुर्द (40)	07	10	14	5	04	0
लोरोली खुर्द (40)	08	9	10	7	5	1
बालिया (40)	09	7	08	8	6	2
डीडवाना (40)	10	12	07	7	04	0
निम्बी कलां (40)	08	9	09	8	06	0
दौलतपुरा (40)	09	9	11	6	05	0
बेरीखुर्द (40)	11	13	10	3	03	0
डाबड़ा (40)	09	11	13	4	03	0
नोसर (40)	08	12	09	06	04	1
कुल उत्तरदाता (400)	85	100	103	62	46	04
प्रतिशत	21.25	25.0	25.75	15.5	11.5	1.0

प्रस्तुत तालिका-7 में डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के चयनित 10 मतदान केंद्रों के कुल 400 उत्तरदाताओं के आधार पर क्षेत्र के प्रमुख चुनावी मुद्दों का विश्लेषण किया गया है। कुल प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, कृषि एवं किसान समस्या क्षेत्र का सबसे प्रमुख चुनावी मुद्दा रही है, जिसे 103 उत्तरदाताओं (25.75 प्रतिशत) ने प्राथमिकता दी है। इसके बाद सड़क एवं बिजली से संबंधित मुद्दे दूसरे प्रमुख चुनावी विषय के रूप में सामने आए हैं, जिन्हें 100 उत्तरदाताओं (25 प्रतिशत) ने महत्वपूर्ण बताया है। पानी की समस्या भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा रही है, जिसे 85 उत्तरदाताओं (21.25 प्रतिशत) ने चुनावी प्राथमिकता बताया है। इसके अतिरिक्त, बेरोजगारी को 62 उत्तरदाताओं (15.5 प्रतिशत) ने महत्वपूर्ण मुद्दा माना है, जो विशेष रूप से युवा मतदाताओं की चिंताओं को दर्शाता है। वहीं, स्वास्थ्य एवं शिक्षा से संबंधित समस्याओं को 46 उत्तरदाताओं (11.5 प्रतिशत) ने प्राथमिकता दी है, जो सामाजिक विकास से जुड़े पहलुओं की ओर संकेत करता है। अन्य मुद्दों को केवल 4 उत्तरदाताओं (1 प्रतिशत) ने महत्वपूर्ण बताया है, जिससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश मतदाता मुख्य रूप से बुनियादी और आर्थिक मुद्दों पर केंद्रित रहे हैं।

6. क्या जातीय समीकरणों का प्रभाव डीडवाना चुनावों (2013/18) में स्पष्ट दिखता है?

तालिका-8: चुनावों (2013/18) में जातीय समीकरणों का प्रभाव

उत्तरदाताओं की कुल संख्या (मतदान केंद्र)	चुनावों (2013/18) में जातीय समीकरणों का प्रभाव				
	बहुत अधिक	मध्यम	कम	बिल्कुल नहीं	कुल प्रतिशत
खुनखुना (40)	06	14	05	15	(100)
खाटूखुर्द (40)	08	15	07	10	(100)
लोरोली खुर्द (40)	06	12	08	14	(100)
बालिया (40)	07	10	06	17	(100)
डीडवाना (40)	06	09	05	20	(100)
निम्बी कलां (40)	08	07	09	16	(100)
दौलतपुरा (40)	07	08	07	18	(100)
बेरीखुर्द (40)	06	07	08	19	(100)
डाबड़ा (40)	09	10	06	15	(100)
नोसर (40)	07	8	04	21	(100)
कुल उत्तरदाता (400)	70	100	65	165	200
प्रतिशत	17.5	25.0	16.25	41.25	(100)

प्रस्तुत तालिका-8 में डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के चयनित 10 मतदान केंद्रों के कुल 400 उत्तरदाताओं के आधार पर वर्ष 2013 एवं 2018 के विधानसभा चुनावों में जातीय समीकरणों के प्रभाव का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सर्वे से प्राप्त कुल आंकड़ों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि जातीय समीकरणों का प्रभाव मिश्रित रहा है। 70 उत्तरदाता (17.5 प्रतिशत) ने माना है कि चुनावों में जातीय

© 2026 घनश्याम. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

समीकरणों का प्रभाव बहुत अधिक था, जबकि 100 उत्तरदाता (25 प्रतिशत) ने इसे मध्यम स्तर का प्रभाव बताया है। इसके विपरीत, 65 उत्तरदाता (16.25 प्रतिशत) ने जातीय प्रभाव को कम माना है। जबकि सबसे अधिक 165 उत्तरदाता (41.25 प्रतिशत) ने यह स्वीकार किया कि चुनावों में जातीय समीकरणों का बिल्कुल प्रभाव नहीं था।

7. 2013 और 2018 के बीच मतदाताओं के मतदान व्यवहार में सबसे बड़ा बदलाव क्या था?

तालिका-9: मतदाताओं के मतदान व्यवहार में बदलाव

उत्तरदाताओं की कुल संख्या (मतदान केंद्र)	मतदाताओं के मतदान व्यवहार में बदलाव					
	राज. दल की बजाय प्रत्याशी को वरीयता	विकास और स्थानीय मुद्दों पर मतदान	सरकार विरोधी भावना में वृद्धि	जाति/समुदाय आधारित मतदान में कमी	युवा मतदाताओं की सक्रिय भागीदारी	कल्याणकारी योजनाओं के आधार पर मतदान में वृद्धि
खुनखुना (40)	6	9	4	6	7	8
खाटूखुर्द (40)	8	11	5	5	4	7
लोरोलीखुर्द 40)	7	12	5	6	6	4
बालिया (40)	7	9	6	7	8	3
डीडवाना (40)	9	7	4	8	7	5
निम्बीकलां (40)	8	6	5	6	6	9
दौलतपुरा (40)	9	8	3	8	7	5
बेरीखुर्द (40)	7	9	4	7	4	9
डाबड़ा (40)	8	7	5	5	6	9
नोसर (40)	9	8	6	4	5	8
कुल उत्तरदाता (400)	78	86	47	62	60	67
प्रतिशत	19.5	21.5	11.75	15.5	15.0	16.75

प्रस्तुत तालिका-9 डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न चयनित मतदान केंद्रों से प्राप्त 400 उत्तरदाताओं के आधार पर 2013 एवं 2018 के चुनावों के बीच मतदाताओं के मतदान व्यवहार में आए परिवर्तनों को दर्शाती है। सबसे अधिक परिवर्तन विकास और स्थानीय मुद्दों के आधार पर मतदान (21.5 प्रतिशत) में देखने को मिला है। कुल 86 उत्तरदाताओं ने माना है कि पिछले चुनावों की तुलना में मतदाता अब विकास कार्यों, स्थानीय समस्याओं और क्षेत्रीय आवश्यकताओं को अधिक महत्व देने लगे हैं। दूसरा महत्वपूर्ण बदलाव राजनीतिक दल की बजाय प्रत्याशी को वरीयता देने (19.5 प्रतिशत) में देखा गया है। कुल 78 उत्तरदाताओं ने यह माना कि अब मतदाता उम्मीदवार की व्यक्तिगत छवि, कार्यशैली और स्थानीय जुड़ाव को अधिक महत्व देते हैं।

इसी प्रकार कल्याणकारी योजनाओं के आधार पर मतदान में वृद्धि (16.75 प्रतिशत) भी एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में सामने आई है। 67 उत्तरदाताओं के अनुसार सरकारी योजनाओं और लाभकारी कार्यक्रमों ने मतदाताओं के निर्णय को प्रभावित किया है। इस तालिका से यह भी ज्ञात होता है कि जाति/समुदाय आधारित मतदान में कमी (15.5 प्रतिशत) का अनुभव किया गया है। 62 उत्तरदाताओं ने माना है कि जातीय पहचान का प्रभाव धीरे-धीरे कम हो रहा है और मतदाता अन्य मुद्दों को प्राथमिकता देने लगे हैं। हालांकि जातीय समीकरण पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं, लेकिन उनकी निर्णायक भूमिका में कमी देखी जा सकती है।

इसके अलावा, युवा मतदाताओं की सक्रिय भागीदारी (15 प्रतिशत) भी मतदान व्यवहार में बदलाव का महत्वपूर्ण संकेतक है। 60 उत्तरदाताओं के अनुसार युवाओं की बढ़ती राजनीतिक जागरूकता और सोशल मीडिया के प्रभाव ने चुनावी प्रक्रिया को अधिक गतिशील बनाया है। सबसे कम परिवर्तन सरकार विरोधी भावना में वृद्धि (11.75 प्रतिशत) में देखने को मिला है जिससे यह संकेत मिलता है कि मतदाताओं का निर्णय केवल एंटी-इन्कम्बेंसी भावना पर आधारित नहीं है, बल्कि वे कई अन्य कारकों को भी ध्यान में रखते हैं।

8. भविष्य में आपका मतदान का निर्णय किस आधार पर होगा?

तालिका-10: भविष्य में मतदान निर्णय के आधार

उत्तरदाताओं की कुल संख्या (मतदान केंद्र)	भविष्य में मतदान निर्णय के आधार				
	विकास कार्य	पार्टी	उम्मीदवार की छवि	स्थानीय मुद्दे	अन्य कारक
खुनखुना (40)	8	6	12	14	00
खाटूखुर्द (40)	6	4	16	12	02
लोरोली खुर्द (40)	8	5	18	09	00
बालिया (40)	7	6	15	10	02
डीडवाना (40)	8	5	14	12	01
निम्बी कलां (40)	9	4	16	11	00

© 2026 घनश्याम. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

दौलतपुरा (40)	7	3	18	12	00
बेरीखुर्द (40)	9	4	15	10	02
डाबड़ा (40)	8	3	17	12	00
नोसर (40)	9	4	14	13	00
कुल उत्तरदाता (400)	79	44	155	115	07
प्रतिशत	19.75	11.00	38.75	28.75	1.75

प्रस्तुत तालिका-10 डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के चयनित मतदान केंद्रों के 400 उत्तरदाताओं के आधार पर भविष्य में मतदाताओं द्वारा मतदान निर्णय लेते समय प्राथमिकता दिए जाने वाले प्रमुख कारकों को दर्शाती है। इस तालिका के अनुसार कुल 155 उत्तरदाता (38.75 प्रतिशत) भविष्य में मतदान निर्णय लेते समय उम्मीदवार की छवि को सबसे महत्वपूर्ण आधार मानते हैं। जबकि, 115 उत्तरदाता (28.75 प्रतिशत) स्थानीय मुद्दों को मतदान निर्णय का आधार मानते हैं। विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्य को 79 उत्तरदाताओं (19.75 प्रतिशत) ने मतदान निर्णय का आधार माना है। इसके विपरीत, केवल 44 उत्तरदाता (11 प्रतिशत) राजनीतिक दल को प्राथमिक आधार मानते हैं। अन्य कारकों को मात्र 7 उत्तरदाताओं (1.75 प्रतिशत) ने महत्व दिया है, जो दर्शाता है कि मतदान निर्णय में मुख्यतः चार प्रमुख कारक ही प्रभावी हैं।

निष्कर्ष

डीडवाना विधानसभा क्षेत्र के वर्ष 2013 और 2018 के चुनावों का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि इस अवधि में इस विधानसभा क्षेत्र की चुनावी राजनीति, मतदाता व्यवहार तथा राजनीतिक प्राथमिकताओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं। साथ ही, डीडवाना विधानसभा क्षेत्र में लोकतांत्रिक सहभागिता निरंतर विकसित हो रही है और मतदाता धीरे-धीरे अधिक जागरूक, मुद्दा-आधारित तथा सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। दोनों विधानसभा चुनावों (2013 और 2018) के आनुभविक तुलनात्मक विश्लेषण यह दर्शाता है कि स्थानीय विकास कार्य और स्थानीय क्षेत्र आधारित मुद्दे दोनों चुनावों में प्रमुख कारक रहे हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि उनके मतदान निर्णय पर स्थानीय समस्याओं, बुनियादी सुविधाओं तथा विकास संबंधी अपेक्षाओं का गहरा प्रभाव रहा है। इन चुनावों के प्रमुख मुद्दों में कृषि एवं किसान समस्याएँ, सड़क-बिजली, पानी और बेरोजगारी जैसे विषयों का प्रमुख स्थान रहा है जो इस क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक संरचना को भी प्रतिबिंबित करता है।

दोनों चुनावों (2013 और 2018) में प्रचार के तरीकों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ है कि पारंपरिक प्रचार के माध्यम जैसे जन-सभाएँ और रैलियाँ अभी भी चुनावी प्रचार का सबसे प्रभावी तरीका हैं। घर-घर संपर्क अभियान भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही, सोशल मीडिया का प्रभाव भी धीरे-धीरे बढ़ रहा है। स्थानीय नेतृत्व के प्रदर्शन के प्रति मतदाताओं की राय दोनों चुनावों के संदर्भ में आधे से अधिक उत्तरदाता इनके संतोषजनक प्रदर्शन से सहमत थे। जबकि एक महत्वपूर्ण वर्ग इसके प्रति असंतोष भी व्यक्त करता है। इन चुनावों में जातीय समीकरणों के प्रभाव के संदर्भ में इस अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि इस क्षेत्र में जाति राजनीति का पूर्णतः अंत नहीं हुआ है। फिर भी, एक बड़ा वर्ग अब जाति आधारित मतदान से हटकर विकास और मुद्दा-आधारित राजनीति की ओर अग्रसर हो रहा है। 2013 से 2018 के बीच मतदाताओं के व्यवहार में सबसे बड़ा बदलाव विकास और स्थानीय मुद्दों पर मतदान (21.5%) के रूप में सामने आया है। मतदाता अब पारंपरिक कारकों जैसे- जाति और दल से हटकर सड़क, शिक्षा, रोजगार और आधारभूत सुविधाओं को अधिक महत्व देने लगे हैं। इसके साथ ही, प्रत्याशी-आधारित मतदान (19.5%) और कल्याणकारी योजनाओं का प्रभाव (16.75%) भी बढ़ा है।

डीडवाना विधानसभा क्षेत्र में मतदाताओं के भविष्य के मतदान व्यवहार में पारंपरिक दल-आधारित राजनीति का महत्व कम होता जा रहा है। इसके स्थान पर, उम्मीदवार की छवि (38.75%) सबसे प्रमुख कारक के रूप में उभरकर सामने आया है जो यह दर्शाता है कि मतदाता अब व्यक्तिगत योग्यता, ईमानदारी और कार्यक्षमता को अधिक महत्व दे रहे हैं। इसके साथ ही, स्थानीय मुद्दे (28.75%) और विकास कार्य (19.75%) भी चुनावों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वहीं, राजनीतिक दल (11%) का अपेक्षाकृत कम प्रभाव यह संकेत देता है कि मतदाता अधिक जागरूक और स्वतंत्र निर्णय लेने की ओर अग्रसर हैं। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि डीडवाना विधानसभा क्षेत्र में 2013 से 2018 के बीच राजनीतिक जागरूकता, मतदाता सक्रियता तथा मुद्दा-केंद्रित राजनीति का विस्तार हुआ है, जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया के परिपक्व होने का सकारात्मक संकेत है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. गाबा, ओम प्रकाश. (2005). राजनीति सिद्धांत की रूपरेखा दिल्ली: नेशनल पेपरबैक
2. अग्रवाल, आर.सी. (2010). पोलिटिकल थ्योरी. दिल्ली: एस चंद एंड कं.
3. शास्त्री, संदीप कुमार, आशुतोष, सिसोदिया, यतीन्द्र सिंह. (2021). इलेक्टोरल डायनेमिक्स इन दी स्टेट्स ऑफ़ इंडिया. दिल्ली: राउतलेज.

© 2026 घनश्याम. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4. लोढ़ा, संजय. (2009). एक्सप्लोरिंग इश्यूज ऑफ़ पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन इन राजस्थान. मध्यप्रदेश जर्नल ऑफ़ सोशल साइंसेज, वॉल्यूम-14, न.-02, दिसंबर, पेज 7-10.
5. Statistical Report (2013/2018) on General Election to the Legislative Assembly of Rajasthan.
6. नागौर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (1990), पृ.226-231.
7. चुनाव आयोग द्वारा जारी आंकड़ें (2013/2018)
8. चुनाव आयोग, भारत सरकार
9. चुनाव आयोग, राजस्थान सरकार
10. शोध सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन क्षेत्र से एकत्रित आंकड़ें

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About Corresponding the author

घनश्याम राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग (स्कूल शिक्षा) में उप-प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत हैं और वर्तमान में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) से "राजस्थान विधानसभा चुनावों में मतदान व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन: विधानसभा क्षेत्र डीडवाना के विशेष संदर्भ में (चुनाव 2013 और 2018)" विषय पर पी.एचडी कर रहे हैं।

© 2026 घनश्याम. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/